# GUJRAT FILES
# (BEYOND THE COMMUNIST LIES)

01

## (पृष्टभूमि एवं षड़यंत्र)

- गोधरा दंगों के उपरांत नरेंद्र मोदी एवं सरकार की छवि खराब करने की नीयत से गुजरात से आने वाले कांग्रेस के दिग्गज नेता एवं सोनिया गांधी के सलाहकार अहमद पटेल कथित समाजसेवी तीस्ता सीतलवाड़ को फोन कर उन्हें मिलने को बुलाते हैं।

- सर्किट हाउस में हुई इस भेंट के दौरान तीस्ता सीतलवाड़ के साथ उनके सहयोगी रईस पठान भी थे जिनके बयान के अनुसार अहमद पटेल ने तीस्ता को कहा कि वे बाबरी मस्जिद प्रकरण में उनकी भूमिका से अवगत हैं।

- बैठक के दौरान पटेल ने उन्हें देश-विदेश से फंड दिलाने एवं वित्तिय सहायता की पेशकश की, इसी दौरान उन्हें भविष्य में सरकार की ओर से सम्मानित करने का भी प्रलोभन दिया गया।

- बकौल पठान तीस्ता को शुरुवात में 5 लाख रुपये उपलब्ध कराए गए थे जबकि बाद में उन्हें 25 लाख रुपये दिए गए थे।

- आने वाले दिनों में तीस्ता सीतलवाड़ गोधरा दंगो के उपरांत सरकार विरोधी मुहिम की धुरी बनकर उभरी, जिसका उद्देश्य येन केन प्रकारेण तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी एवं सरकार को दंगो के लिए उत्तरदायी ठहराना था।

# GUJRAT FILES
# (BEYOND THE COMMUNIST LIES)

02

## (क्रियान्वयन)

- सोनिया गांधी के राजनीतिक सलाहकार अहमद पटेल के इशारे पर गोधरा दंगो के उपरांत तीस्ता सीतलवाड़ अपने पति जावेद एवं अन्य सहयोगियों की सहायता से गैर सरकारी संस्था 'सिटीजन फ़ॉर पीस एंड जस्टिस' की स्थापना करती है।

- एसआईटी की जांच के अनुसार सरकार एवं नरेंद्र मोदी को बदनाम करने के उद्देश्य से संस्था नकली गवाहों एवं फर्जी मुकदमे दायर करने का षड़यंत्र रचती हैं।

- इस दौरान तीस्ता अपने फर्जी मुकदमों को सही प्रमाणित करने के लिए पैसों के दम पर सैकड़ो फर्जी गवाह भी तैयार करती हैं।

- इन प्राथमिकियों के आधार पर गुजरात पुलिस जब गुलबर्ग सोसाइटी प्रकरण में मारे गए सांसद एहसान जाफरी की पत्नी जाकिया जाफरी से लिखित प्राथमिकी दर्ज करने का अनुरोध करती है, तो तीस्ता सुनियोजित षड़यंत्र के तहत इसे रोक देती हैं।

- तीस्ता इस मामले को लेकर सीधे गुजरात उच्च न्यायालय पहुंचती है जहां न्यायालय लिखित प्राथमिकी दर्ज करवाने की बात दुहराती है और जाकिया जाफरी से प्राथमिकी दर्ज कराने को कहती है, तीस्ता एक बार फिर शिकायत करने को तैयार नहीं होती।

- तीस्ता अब न्यायालय के इसी अवलोकन को लेकर सुप्रीम कोर्ट पहुंचती है और दावा करती है कि गुजरात पुलिस और हाई कोर्ट उनकी सुनवाई नहीं कर रही।

- अंततः सुनियोजित षड़यंत्र के तहत तीस्ता सीतलवाड़, मामले को सीधे सुप्रीम कोर्ट में न्यायधीश आफताब आलम की बेंच तक पहुँचाने में सफल होती हैं।

# न्यायिक तंत्र

- तीस्ता की सुनियोजित योजना के अनुसार वर्ष 2008 में सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश आफताब आलम के पास सभी प्रकरणों के आने पर वे इसकी जांच के लिए एसआईटी का गठन करते हैं।

- आरोप लगते रहे हैं कि जस्टिस आफताब की बेटी तीस्ता सीतलवाड़ के एनजीओ के साथ बेहद करीबी ढंग से जुड़ी रही हैं और तीस्ता उनके लिए विदेश भ्रमण की भी व्ययस्था करते आई हैं।

- जस्टिस आफताब एसआईटी की सहायता के लिए प्रशांत भूषण एवं अजमल कसाब के वकील रहे रामचंद्रन को दो एमिकस क्यूरी सदस्यों के रूप में नामित करते हैं।

- यह बताने की आवश्यकता नहीं कि ये दोनों हो सदस्य कट्टर कम्युनिस्ट विचारधारा के समर्थक एवं नरेंद्र मोदी के धुर विरोधी माने जाते हैं।

- खैर एसआईटी एवं सदस्यों को नामित कर के नरेंद्र मोदी समेत कुल 63 लोगों पर दंगो में संलिप्तता की जांच प्रारंभ कर दी जाती है, अब तक सबकुछ योजना के अनुरूप ही चल रहा था हालांकि यहां तीस्ता और टीम से एक गलती हो जाती है।

- दरअसल एसआईटी की अध्यक्षता के लिए पूर्व सीबीआई निदेशक आर के राघवन को नियुक्त किया जाता है जो कालांतर में तीस्ता और टीम की सारी योजनाओं पर पानी फेर देते हैं।

- वहीं इसी दौरान वर्ष 2010 में दंगो की अलग से जांच कर रहे गुजरात उच्च न्यायालय में निर्णय के समीप पहुंच चुके न्यायमूर्ति जोशी को ट्रांसफर कर दिया जाता है, बाद में न्यायमूर्ति जोशी ने कहा था कि उन पर दंगो में मोदी और अमित शाह को फ़साने के लिए दबाव बनाया गया था।

# GUJRAT FILES
## (BEYOND THE COMMUNIST LIES)



# सरकारी तंत्र

- तीस्ता सीतलवाड़ और उनके सहयोगियों ने तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी के विरुद्ध जो षड़यंत्र रचा था उसमें पुलिस विभाग के कई वरिष्ठ अधिकारी भी शामिल थे

- इस षड़यंत्र के क्रियान्वयन में गुजरात कैडर के पूर्व आईपीएस अधिकारी एवं उस समय क्राइम ब्रांच में तैनात संजीव भट्ट एवं नम्बी नारायणन को झूठे केस में फ़साने वाले तत्कालीन पुलिस महानिदेशक श्री कुमार प्रमुख थे

- इनमें संजीव भट्ट ने वर्ष 2015 में स्वयं को उस बैठक में शामिल होने का दावा किया जिसमें उनके अनुसार कथित रूप से नरेंद्र मोदी ने हिंदुओ को अपना गुस्सा निकालने देने की बात कही थी

From left to right: Former IPS Officers Sanjiv Bhatt, Rahul Sharma, R B Sreekumar

- हालांकि न्यायालय के सामने ना केवल उनके आरोप निराधार प्रमाणित हुए अपितु जाकिया जाफरी प्रकरण में दुबारा सुनवाई कर रही सुप्रीम कोर्ट ने अपने अवलोकन में ये माना कि ये दोनों ही अधिकारी विद्वेषित मानसिकता से तत्कालीन सरकार के विरुद्ध षड़यंत्र रचने में संलिप्त थे

- इन दोनों के अतिरिक्त एक और वरीय पुलिस अधिकारी राहुल शर्मा की भूमिका भी संदेह के घेरे में है, इन तीनो पर ही झूठे हलाफ़नाने देने, जालसाजी करने एवं तथ्यों से छेड़छाड़ करने के गंभीर आरोप है जिसकी जांच अभी चल भी रही है

# GUJRAT FILES
## (BEYOND THE COMMUNIST LIES)



# एमिकस क्यूरी की संदिग्ध भूमिका

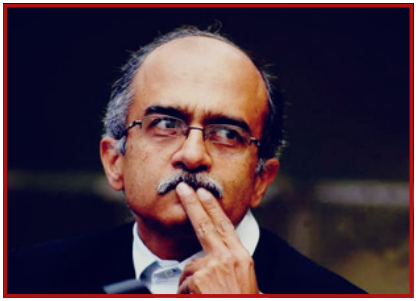

- वर्ष 2010 में एसआईटी ने अपनी प्रारंभिक जांच में पाया कि दंगो में सरकार की भूमिका पर जो सवाल उठाए गए हैं वो निराधार हैं।
- इस रिपोर्ट से बौखलाए कम्युनिस्ट तंत्र ने न्यायालय के माध्यम से एमिकस क्यूरी के सदस्यों को रिपोर्ट की प्रामाणिकता की जांच को भेजा।
- जैसा अनुमानित था ठीक वैसे ही एमिकस क्यूरी के सदस्यों ने नरेंद्र मोदी की दंगो में भूमिका की जांच की सिफारिश की, एसआईटी ने घंटो मोदी से पूछताछ की तथ्यों की दुबारा से जांच की गई।

- हालांकि एसआईटी की जांच में एक बार फिर नरेंद्र मोदी निर्दोष साबित हुए।
- बावजूद इसके की एसआईटी की रिपोर्ट सघन जांच पड़ताल एवं तथ्यों की बार बार सिलसिलेवार ढंग से हुई जांच पर आधारित थी एमिकस क्यूरी के कम्युनिस्ट झुकाव वाले सदस्य।
- रामचंद्रन एवं प्रशांत भूषण नरेंद्र मोदी को तब तक दोषी ठहराते रहे जब तक उन्हें वर्ष 2012 में सुप्रीम कोर्ट से दोषमुक्त ना कर दिया गया।

# GUJRAT FILES
# (BEYOND THE COMMUNIST LIES)



## कम्युनिस्ट (वामपंथी) मीडिया तंत्र

- दंगो के उपरांत गुजरात सरकार के विरुद्ध रचे गए इस षड़यंत्र में तीस्ता सीतलवाड़ एवं सहयोगियों को कम्युनिस्ट झुकाव वाली मीडिया का वर्षो तक पूर्ण समर्थन मिला।
- इस क्रम में लेफ्टिस्ट विचारधारा की पैरोकारी करने वाले पत्रकारों ने वर्षो तक एकपक्षीय रिपोर्टिंग से यह सुनिश्चित किया कि भारत समेत वैश्विक स्तर पर तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी की छवि धूमिल की जा सके।
- सरकार के विरुद्ध इस पक्षपाती पत्रकारिता की मुहिम की अगुवाई कथित पत्रकार एवं एक्टिविस्ट राणा आयूब ने की जिसमें बरखा दत्त, राजदीप सरदेसाई, सागरिका घोष, एवं करण थापड़ जैसे कम्युनिस्ट झुकाव वाले पत्रकारों ने उनका भरपूर समर्थन किया।

- एसआईटी की जांच में यह भी सामने आया कि इस षड़यंत्र का अहम भाग रहे संजीव भट्ट कई लेफ्टिस्ट विचारों के पत्रकारों के निरंतर संपर्क में थे जिनमें कथित मानवाधिकार कार्यकर्ता सुभ्रांशु चौधरी का नाम भी शामिल था।
- वर्षो तक सरकार एवं नरेंद्र मोदी के विरुद्ध कम्युनिस्ट मीडिया द्वारा किए गए इस दुष्प्रचार का मूल उद्देश्य मुस्लिम समुदाय में नरेंद्र मोदी एवं भाजपा के प्रति घृणा का भाव भर, देश को खंडित करने की मंशा वाली कम्युनिस्ट विचारधारा के लिए जमीन तैयार करना था।
- इस क्रम में उन्हें कांग्रेस की तत्कालीन केंद्र सरकार द्वारा भी भीतरखाने से भरपूर सहयोग मिला।

# GUJRAT FILES (BEYOND THE COMMUNIST LIES)



## इशरत जहां और लश्कर

- जहां एक ओर तीस्ता सीतलवाड़ एवं कंपनी अपनी पूरी शक्ति से नरेंद्र मोदी एवं गुजरात सरकार को गोधरा दंगे के लिए कटघरे में खड़ा करने का कुत्सित प्रयास कर रही थी तो वहीं दूसरी ओर इसी काल में चरमपंथी इस्लामिक संगठन लश्कर-ए-तैयबा ने फिदायीन हमले के जरिए उन्हें मारने का प्रयास किया।

- इस हमले के लिए लश्कर ने बिहार में जन्मी इशरत जहां को वर्ष 2004 में फिदायीन हमलेवार के रूप में तैयार किया था, योजना के अनुसार इशरत जहां को, धर्म परिवर्तन करके इस्लाम अपनाने वाले उसके पति जावेद शेख के साथ इस फिदायीन हमले को अंजाम देना था।

- हालांकि इससे पहले कि इशरत फिदायीन हमले को अंजाम दे पाती, गुजरात पुलिस ने अहमदाबाद के बाहरी इलाके में हुई एक मुठभेड़ में जावेद शेख एवं इशरत समेत दो अन्य लोगों को मार गिराया।

- इशरत जहां के मारे जाने के उपरांत देशभर में तुष्टीकरण की राजनीति करने वाले राजनीतिक दलों एवं कम्युनिस्ट तंत्र ने इस पूरे मामले को भुनाने का भरपूर प्रयास किया, यहां तक कि इस प्रकरण में आईबी द्वारा दिए गए इनपुट्स जिससे यह प्रमाणित होता था कि इशरत लश्कर की फिदायीन हमलावर है को कांग्रेस की तत्कालीन केंद्र सरकार द्वारा दबा दिया गया।

- इस पूरे प्रकरण को लेकर तीस्ता सीतलवाड़ एवं कम्युनिस्ट झुकाव वाले मीडिया ने भी लगभग दो दशकों तक खूब हो-हल्ला मचाया, हालांकि वर्ष 2021 में सीबीआई की विशेष न्यायालय ने इस प्रकरण पर अपना निर्णय सुनाते हुए माना कि "इसका कोई ठोस कारण नहीं है कि इशरत जहां एक फिदायीन हमलावर नहीं थी"।

- हैरानी की बात यह भी रही कि इस पूरे प्रकरण में लश्कर-ए-तैयबा के मुखपत्र 'गजवा टाइम्स' में स्पष्ट रूप से इशरत जहां को अपना फिदायीन हमलावर बता कर श्रद्धांजलि दिए जाने एवं मुंबई हमले के आरोपी हेडली द्वारा सार्वजनिक रूप से इशरत को लश्कर का फिदायीन हमलावर बताने के उपरांत भी।

- कम्युनिस्ट झुकाव वाले मीडिया तंत्र एवं राजनीतिक दलों ने उसे देश की बेटी बताते हुए वर्षों इस दुष्प्रचार को बढ़ावा किया।

# GUJRAT FILES (BEYOND THE COMMUNIST LIES)



## निर्णय एवं निष्कर्ष

- वर्ष 2012 में एसआईटी द्वारा सुप्रीम कोर्ट में गुजरात दंगों की क्लोजर रिपोर्ट फाइल की गई, जिसके आधार पर सर्वोच्च न्यायालय ने तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी को सभी आरोपों से दोषमुक्त करार दिया।
- न्यायालय के इस निर्णय के विरुद्ध तीस्ता सीतलवाड़ ने जाकिया जाफरी के माध्यम से सुप्रीम कोर्ट में एक बार फिर याचिका दायर की जिस पर निर्णय देते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने अपने पूर्व के निर्णय को सही ठहराते हुए इसी वर्ष 24 जून को कहा कि।
- "यह स्पष्ट है कि तीस्ता सीतलवाड़ ने याचिकाकर्ता जाकिया जाफरी की भावनाओं का अपने विद्वेषित हित को साधने के लिए दुरुपयोग किया है जिसके पीछे उनकी वास्तविक मंशा की जांच की जानी चाहिए"।
- न्यायालय के इस निर्णय के उपरांत ही एसआईटी ने तीस्ता सीतलवाड़ एवं उनके सहयोगी श्रीकुमार को गिरफ्तार किया है। जबकि इस प्रकरण में एक और अभियुक्त संजीव भट्ट पहले से ही जेल में हैं, एसआईटी तीस्ता पर सात करोड़ रुपए के ग़बन की भी जांच कर रही है जो उन्होंने दंगा पीड़ितों की सहायता के नाम पर जुटाई थी।
- इसमें संशय नहीं की सोनिया गांधी के राजनीतिक सलाहकार अहमद पटेल के इशारे पर कम्युनिस्ट झुकाव वाली मीडिया एवं पुलिस के कुछ भ्रष्ट अधिकारियों के साथ मिलकर तीस्ता सीतलवाड़ ने नरेंद्र मोदी एवं तत्कालीन गुजरात सरकार के विरुद्ध गहरा षड़यंत्र रचा था जिसका एकमात्र उद्देश्य।
- आम जनमानस के बीच नरेन्द्र मोदी की बढ़ती लोकप्रियता से घबराए राजनीतिक दलों एवं कम्युनिस्ट तंत्र की राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति हेतु उनकी छवि धूमिल करना था ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि नरेंद्र मोदी कभी भी भारत का नेतृत्व ना कर सकें।